रेत के गांव में लहर

प्रेरणा
अरविन्द ओझा, सचिव, उरमूल ट्रस्ट
प्रभात कुमार, राज्य कार्यक्रम प्रबंधक, सेव द चिल्ड्रन

मार्गदर्शन
डॉ. मनीषा चावला

समन्वयन
नीरज जुनेजा
अशोक शर्मा

विशेष सहयोग
डॉ. हेमन्त आचार्य

आलेख, फोटो, रूप–रेखा
दिपिका नैयर, रवि मिश्रा

आभार
जिला प्रशासन– जैसलमेर
मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जैसलमेर
ब्लॉक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जैसलमेर एवं सम
उप निदेशक, समेकित बाल विकास सेवाएं, जैसलमेर
बाल विकास परियोजना अधिकारी, जैसलमेर एवं सम

सहयोग
सुनीता सिंह, ए.एन.एम., डेलासर
सुगना कॅवर, आशा सहयोगिनी, डेलासर
काली देवी, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, भोजका
अशोक शर्मा, परियोजना समन्वयक, उरमूल ट्रस्ट
पंकज केवलिया, अनूप, और नैनाराम, उरमूल ट्रस्ट

प्रकाशक
उरमूल ट्रस्ट, उरमूल भवन, बीकानेर–334001
फोन 0151–2205718, ईमेल– mail@urmul.org
मुद्रक : कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर 334003
श्रृंखला : स्वास्थ्य एवं स्वच्छता 1, 2011

रेत के गांव में लहर

राजस्थान के जैसलमेर जिले के गांवों में ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति की प्रभावी कार्यप्रणाली पर एक अध्ययन

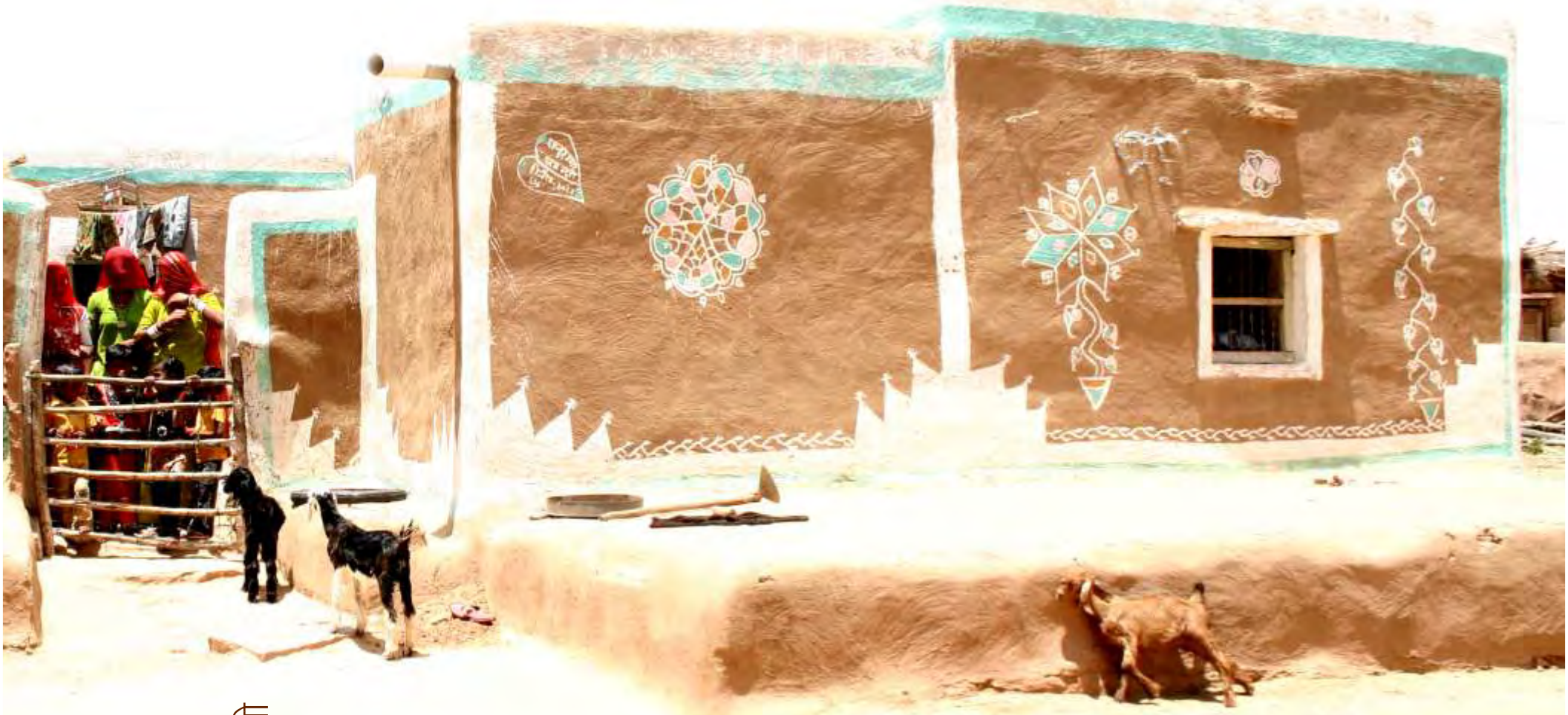

विषय सूची

संक्षिप्त विवरण 1

परिचय 2

अध्ययन 4

प्रशिक्षण 5

समिति की कार्यप्रणाली और सफलताएं 10

निष्कर्ष 21

सुझाव 22

संक्षिप्त विवरण

इसमें कोई शक नहीं कि एक मां अपने बच्चे से असीमित प्यार करती है, लेकिन क्या वह अपने बच्चे का गुणवत्तापूर्ण पालन–पोषण कर सकती है। जब कि वह खुद अस्वस्थ, खून की कमी के कारण कमजोर हो। गरीब और शोषित हो। अनपढ़ और बेखबर हो। एक झुग्गी–बस्ती में अपने पांच–छः बच्चों के साथ रहती हो। जहां न तो साफ–सफाई हो और न ही पीने योग्य पानी। इन सबके बीच उसको और उसके नवजात को जिंदा रखने के लिये न तो उसे स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया हो रहीं हों और न ही उसका समुदाय उसकी सहायता कर रहा हो। यहां तक कि उसका पति भी नहीं। भारत के कई गांवों में महिलाओं की स्थिति कुछ इसी तरह से आपके सामने आती है।

रेखांकित जिलों में ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति की क्षमता वर्धन का जिम्मा उरमूल ट्रस्ट को दिया गया है।

आर्थिक और सामाजिक विकास की प्रक्रिया में स्वास्थ्य के महत्व को स्वीकारने और लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये भारत सरकार ने 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन.आर.एच.एम.) की शुरुआत की जिससे वर्तमान की बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाया जा सके। उसकी देखरेख की जा सके। इसके साथ ही उसमें आवश्यक बदलाव लाया जा सके। मिशन का लक्ष्य न सिर्फ लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराना है, बल्कि स्वास्थ्य के प्रति उनका नजरिया बदलना भी है। पोषणयुक्त आहार, साफ–सफाई, पीने के पानी का स्वच्छता से प्रयोग, रोग होने या उससे बचाव के लिये दवा का प्रयोग करने जैसी छोटी मगर मोटी बातों की समझ को लोगों के अंदर जगाना मिशन द्वारा निर्धारित किया गया है। मिशन की योजना के तहत स्वास्थ्य पर सार्वजनिक व्यय बढ़ाने, स्वास्थ्य सुविधाओं के ढ़ांचे में हुये असंतुलन को कम करना, स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रबंधन, जिला स्तर पर तय होने वाली स्वास्थ्य योजनओं का प्रबंधन और स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति लोगों की सामूहिक भागीदारी जैसी कार्य योजनायें भी शामिल हैं। जिससे कि देश के सभी जिलों का प्रत्येक ब्लॉक भारतीय जन स्वास्थ्य मानकों पर खरा उतरे।

केंद्र और राज्य सरकार की तरफ से दी जा रही स्वास्थ्य सुविधाएं ग्राम स्तर पर भी सभी लोगों को आसानी से मिले, इन सुविधाओं में किसी तरह का विलम्ब न हो। स्वास्थ्य सुविधाओं को प्राप्त करने के लिये लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी और भागीदारी दोनों हों और इसके साथ ही ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं की निगरानी उनके समुदाय के द्वारा ही हो, इसके लिये ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति (वी.एच.एस.सी.) का गठन किया गया। इस समिति को उनकी कार्यप्रणाली की समझ बनाने, स्वास्थ्य सुविधाओं और समय–समय पर केंद्र व राज्य सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी देना, प्राथमिक चिकित्सा प्रणाली से अवगत कराना और प्रशिक्षण देने का जिम्मा उनके क्षेत्र में स्वास्थ्य मुद्दों पर काम कर रही स्वैच्छिक संस्थाओं को दिया गया। राजस्थान के जैसलमेर, हनुमानगढ़ और जोधपुर जिले (जोधपुर जिले के केवल 4 ब्लॉक) में यह जिम्मेदारी उरमूल ट्रस्ट को दी गई। यह रिपोर्ट उरमूल ट्रस्ट और उसकी सहयोगी संस्था सेव द चिल्ड्रन के प्रयासों को सामने लाते हुये वी.एच.एस.सी. की प्रभावी कार्यप्रणाली और उनकी सफलताओं को दर्शाती है।

परिचय

एक बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत आज पूरे विश्व के सामने आ चुका है। बावजूद इसके देश में बच्चों के प्रति संवेदनशीलता बहुत कम है। गरीब और अमीर वर्ग के बीच एक भारी असमानता देखने को मिलती है। दशकों से स्वास्थ्य को लेकर सरकार के प्रयासों और दृढ़ इरादों के बावजूद कई उप सहारा अफ्रीकी देशों की तुलना में भारत की स्थिति अभी भी चिंताजनक बनी हुई है। यूनिसेफ द्वारा 2009 में प्रस्तुत ऑकड़ों पर नजर डालें तो भारत में अब भी नवजात मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर अधिक है। जबकि 1000 जन्म लेने वाले बच्चों में से 68 बच्चे अपना छठा जन्मदिन भी नहीं देख पाते। इस देश में आधी महिलाओं को अपने जीवन में एक बार खून की कमी से इलाज कराना पड़ता है। जबकि समय–समय पर विभिन्न सरकारी और स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा किये गये सर्वे और देश और विदेश की मैगजीन, अखबारों में यही सामने आता है कि देश के 22 फीसदी से ज्यादा बच्चे जन्म से ही कमजोर पैदा होते हैं, जो आगे चलकर कुपोषण और उनकी मृत्यु का कारण बनता है। ग्रामीण इलाकों में यह स्थिति और भी ज्यादा गंभीर है। जातीय भेदभाव, सामाजिक परिस्थितियां और बरसों से चले आ रहे कुछ हानिकारक रीति–रिवाज उन्हें और भी अस्वस्थ बना देता हैं। वहीं एन.आर.एच.एम. की मानें तो भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं पर सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का 1 फीसदी हिस्सा भी खर्च नहीं किया जाता है।

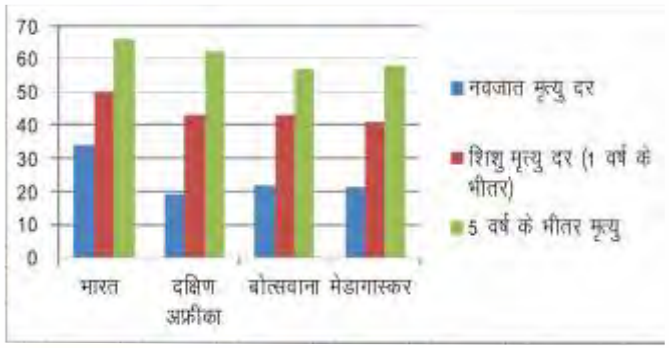

ऑकड़े बताते है कि शिशु मृत्यु दर में भारत की स्थिति गंभीर बनी हुई है

राजस्थान

क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में आमजन के स्वास्थ्य को लेकर समस्या काफी गंभीर बनी हुई है। इनमें गर्भवती महिलाओं और प्रसव के बाद महिलाओं और शिशुओं की दशा और भी ज्यादा गंभीर है। हाल ही में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, राजस्थान द्वारा राजस्थान जननी शिशु सुरक्षा योजना को बढ़ावा देने के लिये निकाले इश्तेहार में दिये गये निम्नलिखित ऑकड़े चौंकाने वाले हैं।

1. एक वर्ष में 5300 महिलाओं की मृत्यु गर्भावस्था संबंधी जटिलताओं के कारण होती है।
2. जन्म के एक वर्ष के भीतर प्रदेश में 98,500 शिशुओं की मृत्यु हो जाती है।
3. जन्म के एक महीने के अंदर 66,800 शिशुओं की मृत्यु हो जाती है।
4. जन्म के एक सप्ताह के भीतर 50,700 शिशुओं की मृत्यु हो जाती है।

एन.आर.एच.एम. के ऑकड़ों को देखें तो प्रदेश में जनन क्षमता दर 3.3 है। शिशु मृत्यु दर अनुपात 63 है और मातृ मृत्यु दर अनुपात 388 है (एस.आर.एस. 2004–2006)। जनगणना 2011 में राज्य में लिंग अनुपात बढ़कर 926 हो गया है। राजस्थान सहित भारत के अन्य राज्यों में स्वास्थ्य दशा को सुधारने के लिए एन.आर.एच.एम. ने अपने सात साल (2005–2012) की योजनाओं में निम्नलिखित लक्ष्यों को पूरा करना तय किया।

- ★ स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना
- ★ मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी लाना, जनसंख्या स्थिरीकरण, लिंग अनुपात को समान करना और जनसांख्यिकी संतुलन बनाना।
- ★ सार्वजनिक तौर पर मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं जैसे महिलाओं के स्वास्थ्य,बच्चों के स्वास्थ्य, पानी, स्वच्छता, स्वच्छ जल, प्रतिरक्षण के लिये सरकार द्वारा मुहैया सुविधाओं के लिये लोगों में इस तरह की समझ बनाना कि वह इनको सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण अंग समझें
- ★ छुआछूत और अन्य रोगों सहित स्थानीय रोगों की रोकथाम और नियंत्रण
- ★ हर व्यक्ति आसानी से एकीकृत व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठा सके
- ★ स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा को पुनर्जीवित करना और आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) को चिकित्सा की मुख्यधारा में लाना

ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति का गठन

राज्य में मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने तथा ग्रामीण जन–समुदाय को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से एन.आर.एच.एम. का क्रियान्वयन किया जा रहा है। मिशन के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के साथ–साथ समुदाय स्तर के कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया है। ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य नियोजन, स्वास्थ्य समस्याओं के निराकरण तथा स्वास्थ्य कार्यक्रमों की निगरानी करने के लिये प्रत्येक गांव में ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति (वी.एच.एस.सी.) का गठन किया गया है। ग्राम स्तर पर समुदाय के साथ बनी इस समिति में वार्डपंच, ए.एन.एम., आशा सहयोगिनी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अनिवार्य आमन्त्रित सदस्यों के साथ–साथ गांव में बने स्वयं सहायता समूह के सदस्य और समुदाय के ऐसे लोग शामिल है जो समुदाय की समस्याओं को किसी भी अधिकारी के समक्ष रखने में सक्षम हैं। राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान द्वारा गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से इन समितियों के सदस्यों का प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमता वर्धन किया गया। जिसके बाद वह अपने समुदाय में स्वच्छ और स्वास्थ्य बनाने में जुट गए हैं।

अध्ययन

उद्देश्य– ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति पर किये गये इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि समितियों के गठन के बाद से उनके समुदाय में स्वास्थ्य को लेकर किस तरह का बदलाव आया। स्वास्थ्य सेवाओं पर समिति के माध्यम से निगरानी और उनके कार्य से मिली सफलताओं को जानने के लिये भी यह अध्ययन किया जा रहा है। अध्ययन का उद्देश्य यह भी जानना है कि, एन.आर.एच.एम. के लक्ष्यों को पूरा करने के लिये उरमूल ट्रस्ट और उसकी सहयोगी संस्था सेव द चिल्ड्रन ने इन समितियों का किस तरह से क्षमता वर्धन किया।

प्रक्रिया– ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति पर किया गया यह अध्ययन उरमूल ट्रस्ट, सेव द चिल्ड्रन और ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति की सहभागिता से किया गया। इस अध्ययन में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई।

- ★ एन.आर.एच.एम. और राज्य सरकार व केंद्र सरकार द्वारा समिति के प्रशिक्षण के लिये प्रकाशित सामग्री और वेबसाइट्स का अध्ययन किया गया। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन किया गया।
- ★ समितियों की कार्यप्रणाली को विस्तार से समझने के लिये, जिले में समितियों को प्रशिक्षण दे रही संस्था उरमूल ट्रस्ट और सेव द चिल्ड्रन के प्रतिनिधियों और गांव के लोगों के साथ मिलकर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रचार–प्रसार में काम कर रहे जनप्रतिनिधियों से बातचीत की गई।
- ★ जैसलमेर जिले में वी.एच.एस.सी. को मजबूत करने का काम कर रही संस्था उरमूल ट्रस्ट के प्रतिनिधियों के साथ बैठकर गांवों और वहां प्रभावी रूप से काम कर रही समितियों के बारे में जानकारी इकट्ठी की गई। समितियों के कार्य और उनकी सफलता को देखने के लिये गांवों का चयन किया गया।
- ★ गांव में नियुक्त ए.एन.एम., आशा सहयोगिनी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी सहायिका, समितियों के सदस्य से उनकी कार्यप्रणाली के बारे में बातचीत की गई। समितियों द्वारा पंजीकरण के लिये प्रयोग में लाने वाले रजिस्टर, विलेज हैल्थ प्लान, स्वास्थ्य सुविधाओं और स्वास्थ्य उपकरणों को उनके प्रयोग के साथ देखा गया।
- ★ ग्रामीणों से स्वास्थ्य विषय पर पहले के हालात और वर्तमान की स्थिति को लेकर बातचीत की गई। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के बारे मे बातचीत कर उनके इस बारे में विचार भी जाने गये। समितियों के प्रभावी कार्य से एक बार फिर जीवन पाने वाली महिलाओं और शिशुओं के घरों का भ्रमण कर उनके परिवार से बातचीत की गई।

सैम्पल– इस अध्ययन के लिये जैसलमेर जिले के डेलासर, भोजका और डाबला गांव का चयन किया गया। ये तीनों गांव मोहनगढ़ स्थित पब्लिक हैल्थ सेंटर (पी.एच.सी) के क्षेत्र में मौजूद हैं। सैंपल के आधार को निम्नलिखित माध्यम से तय किया गया।

जनसंख्या	सभी गांवों की जनसंख्या एक हजार से ज्यादा है।
स्वास्थ्य सुविधाएं	डेलासर में उप स्वास्थ्य केंद्र होने के चलते वहां आसानी से स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध है। जबकि भोजका से उप स्वास्थ्य केंद्र की दूरी लगभग 15 किलोमीटर है। वहीं डाबला से जिला अस्पताल की दूरी 20 किलोमीटर है। दूरी के आधार पर स्वास्थ्य सुविधाओं का लोगों तक आसानी से या कठिनाई से पहुंचना ध्यान में रखा गया।
समिति का गठन और कार्य का समय	सभी गांवों में ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति के गठन और उनके कार्य का समय 1 वर्ष से अधिक है।

प्रशिक्षण

वी.एच.एस.सी. के प्रभावी संचालन के लिये उरमूल ट्रस्ट और उसकी सहयोगी संस्था सेव द चिल्ड्रन द्वारा जैसलमेर के तीन ब्लॉक पोखरण, जैसलमेर और सम में 616 वी.एच.एस. सी. का क्षमता वर्धन किया गया। 3736 सदस्यों को एन.आर. एच.एम. द्वारा निर्धारित अनिवार्य कार्यप्रणाली की समझ बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने के लिये तीन सत्र में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया।

पहला सत्र

हमारा गांव, हमारा स्वास्थ्य– हमारे गांव में स्वास्थ्य का क्या महत्व है। इस विषय को लेकर संस्थान ने समिति के सदस्यों में समझ बनाने के लिये प्रशिक्षण का आयोजन किया। जिसमें इस विषय के निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई।

स्वस्थ एवं खुशहाल गांव– इस मुद्दे पर संस्थान ने समिति के सदस्यों को स्वस्थ रहने से परिवार में खुशहाली के साथ–साथ उनके आर्थिक विकास जैसे फायदे को समझाया। समिति के सदस्यों की मुख्य रूप से निम्न बीमारियों पर समझ बनाई गई जिससे कि वह अपने गांव के लोगों के बीच इसका प्रचार–प्रसार कर सकें।

संक्रमित रोगों से बचाव व उपचार– प्रशिक्षण के माध्यम से समिति के सदस्यों को दस्त, सांस की बीमारी, मलेरिया, तपेदिक जैसे रोगों के कारण और लक्षण के बारे में बताया गया। उनसे बचने के लिये रोजमर्रा की जिंदगी में साफ–सफाई से रहकर हम संक्रमित रोगों से बच सकते है। रोग होने पर पारंपरिक उपचार के साथ–साथ आधुनिक चिकित्सा का सहारा लेकर उससे निजात पायी जा सकती है।

हमारी स्वास्थ्य सेवाएं एवं स्वास्थ्य प्रदाता– इस विषय पर समिति के सदस्यों को आशा सहयोगिनी और ए.एन.एम. की भूमिका व जिम्मेदारियों से अवगत करवाया गया। इसके साथ ही स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों पर प्राप्त होने वाली सेवाओं और उपलब्ध सुविधाओ के बारे में चर्चा की गई। दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने के लिए आशा सहयोगिनी और ए.एन.एम. की सहायता करना समिति का दायित्व है। स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी हर जानकारी सभी तक पहुंचाने के लिये समिति को इनकी मदद करनी चाहिए।

कुपोषण– राजस्थान सहित देश के अधिकतर राज्यों में कुपोषण एक गंभीर मुद्दा बन गया है। इस मुद्दे पर समिति के सदस्यों की समझ बनाने और उन्हें निरंतर बच्चों की वजन निगरानी, उपचार, साफ–सफाई और परिवार से बातचीत करने के लिये मार्गदर्शन किया गया। जो वर्तमान में भी चालू है। कुपोषण को खत्म करने के लिये समिति के सदस्यों को नवजात से लेकर किशारियों और महिलाओं की नियमित वजन निगरानी, नवजात को खींस और छः माह तक केवल स्तनपान करवाकर और आंगनबाड़ी में सभी बच्चों और किशोरियों का पंजीकरण करवाकर उन्हें पोषाहार दिलवाए जाने की जिम्मेदारी के बारे में बताया गया। इसके अलावा महिलाओं, बालिकाओं एवं किशोरियों के साथ खान–पान में भेदभाव न करने के लिए लोगों को प्रेरित करने की सीख दी गई। जैसे कि जिले के गांवों में अधिकतर देखने को मिलता है। पुरुष पहले भोजन कर लेते हैं। प्रतिदिन के भोजन में से जो बच जाता है, उसे महिलाएं और किशोरियां खाती हैं। हालांकि यह भेदभाव अब तेजी से मिटता देखा जा सकता है। सभी गर्भवती महिलाओं को आयरन फॉलिक एसिड की गोलियां नियमित रुप से लेने का संदेश देना चाहिए। साथ ही विद्यालय और ऑगनबाड़ी में मिड डे मील और पोषाहार, आशा और ए.एन.एम. के पास दवाईंयों की उपलब्धता और राशन की दुकान में अनाज का स्टॉक और उसका नियमित वितरण सुनिश्चित करना भी समिति की जिम्मेदारी है। रेगिस्तान होने के कारण बकरी–भेड़ पालन के लिये समिति द्वारा लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि लोगों को दूध, दही और मांस उपलब्ध हो।

स्वस्थ मां स्वस्थ बच्चा– इस विषय पर प्रशिक्षण के दौरान समिति के सदस्यों को गर्भावस्था के दौरान/प्रसव के दौरान व प्रसव के बाद प्राप्त होने वाली सेवाओं, जननी सुरक्षा योजना और बेटी बचाओ अभियान के बारे में जानकारी दी गई।

जननी सुरक्षा योजना– समिति के सदस्यों को एन.आर.एच.एम. द्वारा चलाई जा रही इस योजना के लाभ के बारे में बताया गया। योजना के अन्तर्गत संस्थागत प्रसव करवाने वाली प्रत्येक ग्रामीण महिला को 1400/– रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है और आशा सहयोगिनी के साथ होने पर वाहन खर्च के 300/– रुपये अतिरिक्त प्राप्त होते हैं।इसके साथ ही सरकार जल्द ही गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु सरकारी अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर सभी सुविधाओं जैसे संस्थागत प्रसव, आवश्यकतानुसार सिजेरियन ऑपरेशन, जॉच सुविधाओं, रक्त की कमी पर गर्भवती महिला के परिजनों द्वारा रक्तदान करने पर रक्त सुविधा, दवाईयां व अन्य आवश्यक सामग्री, आहार, घर से गर्भवती महिला को लाने और प्रसव के बाद ले जाने या आपात स्थिति में चिकित्सा संस्थान से उच्च चिकित्सा संस्थान तक वाहन की व्यवस्था यह सब निःशुल्क करने के साथ–साथ यूजर चार्जेज जैसी अन्य सुविधाओं पर भारी छूट जैसी सुविधाएं देने जा रही है। यही नहीं इस योजना के तहत बीमार नवजात शिशुओं जो कि एक महीने से कम उम्र के हैं। उनका इलाज, रक्त सुविधा (परिजनों के दान करने पर), जांच सुविधाएं, दवाईयां एवं अन्य आवश्यक सामग्री और वाहन सेवा निःशुल्क उपल्बध कराई जाएगी। इसके अलावा जननी सुरक्षा योजना के तहत प्रसूताओं को दी जाने वाली नकद सहायता की पूर्ति भी की जाएगी।

बेटी बचाओ अभियान– बेटी बचाओ अभियान में समिति की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। समिति को समुदाय के सभी लोगों को मातृ शिशु स्वास्थ्य सेवाओं पर समीक्षा बैठक में आमंत्रित करना चाहिये। वंचित समुदाय खासतौर पर महिलाओं को सरकार की तरफ से दी जाने वाली सभी सुविधाएं जैसे बी.पी.एल. कार्ड के तहत राशन दिलवाना भी समिति की जिम्मेदारियों में शामिल है। संस्थागत प्रसव के साथ जन्म और मृत्यु पंजीकरण अनिवार्य करने के लिये जोर देना चाहिए। 108 एंबुलेंस के न आने पर अनटाइड फंड से पैसा लेकर गर्भवती महिला और मरीज को अस्पताल पहुंचाना चाहिए। लिंग जांच के संबंध में समाचार मिलने पर जिला कलक्टर एवं मुख्य चिकित्सा एंव स्वास्थ्य अधिकारी को शिकायत करनी चाहिए। यह शिकायत टेलीफोन नं. 0141–2222422 पर की जा सकती है। लोगों में लड़के–लड़कियों की समानता पर जागरूकता बढ़ाने के लिए गतिविधियां जैसे चौपाल पर बैठक, स्कूल प्रबंधन समिति की बैठक आदि आयोजित करनी चाहिए।

युवाओं और किशोर–किशोरियों के मार्गदर्शन हेतु प्रशिक्षण– किशोरावस्था और युवावस्था के दौरान लड़के–लड़कियों में कई तरह के शारीरिक और मानसिक बदलाव आते हैं। वह अपनी पढ़ाई, रोजगार के साथ–साथ सामाजिक संबंध और समाज में अपनी पहचान बनाने आदि के बारे में उत्सुक होते हैं। इस प्रशिक्षण के माध्यम से समिति के सदस्यों को यह समझाया गया कि वह किस तरह से किशोर–किशोरियों और युवाओं को इन विषयों पर सहायता कर सकते हैं। युवाओं और किशोर–किशोरियों के मार्गदर्शन के लिये समिति के सदस्य उनके बीच जाकर नशे से दूर रहने, पढ़ाई–खेलकूद–व्यवसाय के लिये प्रोत्साहन देने, समुदाय की समस्याओं के निवारण जैसे बाल विवाह को रोकने के लिये प्रेरित करने जैसी बातों का प्रसार–प्रचार करें। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया गया। सदस्यों को यह भी बताया गया कि ग्राम सभा आयोजित कर के कम उम्र में विवाह की रोकथाम के लिए पूरे गांव के साथ मिलकर योजना बनानी चाहिए। सभी गांववासियों को 18 साल से कम उम्र की बेटी की शादी/गौना नहीं करने की प्रतिज्ञा दिलवानी चाहिए। इसके साथ ही वह जहां कहीं भी ऐसा होता सुने तो उसे रोकने का प्रयास करना चाहिए।

हमारा मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस– प्रदेश में मातृ शिशु मृत्यु दर रोकने, कुपोषण को समाप्त करने और महिलाओं, किशोर–किशोरियों के स्वास्थ्य की देखरेख जैसे विषयों को लेकर हर गांव में समिति के सदस्यों की सहायता से स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस मनाने का नियम एन.आर.एच.एम. द्वारा प्रायोजित है। जिसके लिये समिति के सदस्यों को निम्नलिखित बाते बताई गई।

- ★ महिला व बच्चों को स्वास्थ्य पोषण सेवाएं समेकित रूप से प्रदान करने के लिए मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस, माह में एक बार, निश्चित दिवस पर (सामान्य रूप से महीने के मध्य के एक गुरूवार या सोमवार को) आयोजित किया जाता है।
- ★ यह दिवस आंगनबाडी केंद्र और उप स्वास्थ्य केंद्र पर आयोजित किया जाता है।
- ★ ए.एन.एम. आशा सहयोगिनी व आंगनबाडी कार्यकता समिति के सदस्यों के साथ मिलकर इस दिवस का आयोजन करते हैं। पंचायत के सदस्य, महिला समूह व स्वैच्छिक संगठनों के कार्यकर्ता भी इसमें सहयोग देते हैं।

- ★ मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर सभी गर्भवती महिलाओं, तीन वर्ष तक के बच्चों, स्तनपान कराने वाली महिलाओं, योग्य दंपतियों, किशोरी बालिकाओं आदि लोगों को सेवाएं प्रदान की जाती हैं।
- ★ इस दिवस के आयोजन स्थल, समय एवं उपलब्ध सेवाओं के बारे में सभी को बताना चाहिए।
- ★ उसके लिए स्थानीय भाषा में दीवार पर संदेश लिखे जा सकते हैं। गांव के एक या दो मुख्य स्थलों पर बैनर लगवाए जा सकते है।
- ★ लाउड स्पीकर से प्रचार–प्रसार करवाया जा सकता है। इस लाउड स्पीकर पर स्वास्थ्य गीत बजवाए जा सकते हैं। ढ़ोल ताशे, मुनादी आदि स्थानीय माध्यम से सूचित करवाना चाहिए। इस गतिविधि के लिए मासिक 100 रूपये तक का खर्च अनटाइड फंड की राशि में से किया जा सकता है।

दूसरा सत्र

ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति क्यों ?– इस प्रशिक्षण के माध्यम से समिति के सदस्यों को ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति के महत्व, गठन व भूमिका के बारे में जानकारी बढ़ाई गई, जिससे कि समिति को प्रभावी बनाये रखने में वह अपनी भूमिका की अहमियत को समझ पायें। प्रशिक्षण में समितियों के कार्य पर चर्चा, जानकारी को जांचने के लिये प्रतियोगिता और खेल के माध्यम से समितियों के सदस्यों का क्षमता वर्धन किया गया।

तीसरा सत्र

प्रशिक्षण के लिये तीसरे सत्र का आयोजन करने का उद्देश्य समिति के सदस्यों में समिति की कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से चलाने की समझ बनाई गई।

मासिक बैठक– इस विषय पर समिति के सदस्यों को मासिक बैठक के उद्देश्य, बैठक की तारीख, स्थान व समय, बैठक का संयोजन, मासिक बैठक के लिए चर्चा के बिन्दु, बैठक का संचालन, बैठक में प्रभावी संवाद के लिए सहायक बिंदु, बैठक की कार्यवाही, गांव में स्वास्थ्य कार्यों की समीक्षा, और मासिक बैठक के दस्तावेजों के बारे में विस्तार पूर्वक समझाया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान समिति के सदस्यों को समिति की बैठकों के दिशा–निर्देशों की प्रतियां, अनटाइड फंड के उपयोग के लिये वाउचर व रजिस्टर से संबंधित दिशा–निर्देशों की प्रतियां, बोर्ड चॉक, चार्ट पेपर, मार्कर पेन, मातृ शिशु स्वास्थ्य एंव पोषण दिवस की निगरानी की प्रश्नावली की प्रतियां उपलब्ध करवा कर उनके ज्ञान में वृद्धि की गई

हमारी स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी एवं पैरवी– इस विषय पर समिति के सदस्यों को स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी हेतु क्षमता वर्धन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य था।

- ★ गांव में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की निगरानी करने में ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। निगरानी करने से पता चल सकता हैं कि लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हो रही हैं या नहीं ? क्या वे सेवाओं से संतुष्ट हैं।
- ★ स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने में लोगों को हो रही परेशानियों को दूर करना तथा सभी को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए पैरवी करना ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिसकी निगरानी दो प्रकार से की जा सकती है पहला निरीक्षण के द्वारा और दूसरा लोगों से बातचीत करके।

हमारा अनटाइड फंड– इस विषय पर समिति के सदस्यों को अनटाइड फंड (10000 रूपये) के प्रयोग के बारे में, फंड के बजट के बारे में, फंड के उपयोग हेतु बजट बनाने के बारे में, अनटाइड फंड का लेखा–जोखा रखने के दौरान आने वाली परेशानियों और उनके समाधान के बारे में बतलाया गया। इस दौरान सभी सदस्यों को बजट की प्रतिलिपि उपलब्ध करवा कर उनकी बजट बनाने की क्षमताओं को विकसित किया गया।

हमारे गांव की स्वास्थ्य योजना (विलेज हैल्थ प्लान)– इस विषय पर ग्राम स्वास्थ्य योजना के नियोजन के घटकों पर विस्तार से प्रशिक्षणार्थियों को समझाया गया। कैसे स्वास्थ्य समिति के सदस्य गांव की आवश्यकताओं का निर्धारण करके, स्वास्थ्य लक्ष्यों को जान सकते हैं। गांव स्तरीय संभावित लक्ष्य (जैसे प्रसव पूर्व जांच, टीटनेस के टीके, प्रसूताओं की पूर्ण जांच, बच्चों का सम्पूर्ण टीकाकरण, परिवार नियोजन के साधनों की उपलब्धता, जन्म के तुंरत बाद और प्रभावी स्तनपान का प्रचार प्रसार आदि), लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गतिविधियों का निर्धारण, गतिविधियों पर खर्च के बजट तैयार करना, मासिक बैठक में नियोजन की समीक्षा किस तरह से की जा सकती है आदि बातों को इस प्रशिक्षण के माध्यम से बताया गया। इस दौरान सदस्यों को बजट की प्रतिलिपि उपलब्ध करवाकर उनके गांवों की समिति के बजट का अभ्यास करवाया गया।

जन जागरुकता अभियान– ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति के बारे में आमजन को अवगत कराने के लिये उरमूल ट्रस्ट और उसकी सहयोगी संस्था सेव द चिल्ड्रन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाने जाने वाले महोत्सव जैसे मरु मेला, में भी प्रसार–प्रचार की गतिविधियां की। जिससे कि आमजन इनको आसानी से समझे और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को लेकर सजग हो।

समिति की मदद से खुशहाल हुआ डेलासर

आशा सहयोगिनी सुगना कॅवर

भारत के सीमावर्ती इलाके वाले राजस्थान के जैसलमेर जिले से 60 किलोमीटर दूर स्थित गांव है, डेलासर। इस गांव में रह रहे 300 परिवारों में करीब 1800 लोग रहते हैं। इस गांव में वी.एच.एस.सी. का गठन तो हो गया था, लेकिन उसकी कार्यप्रणाली एकदम लचर थी। यहां तक कि समुदाय की स्वयंसेवी स्वास्थ्य कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी का भी गांव में कोई अता–पता नहीं था। वर्ष 2011 की शुरुआत में राजस्थान में नियुक्त ए.एन.एम. सुनीता सिंह का तबादला डेलासर गांव के उप स्वास्थ्य केंद्र पर हुआ। सुनीता सिंह के अनुसार इससे पहले उन्हें कभी भी इस तरह के विपरित परिस्थितियों वाले गांव में काम नहीं करना पड़ा। यहां उनकी मदद के लिये समुदाय की तरफ से कोई महिला भी आगे नहीं आ रही थी।

आशा सहयोगिनी का चयन– सुनीता ने आते ही गांव में आशा सहयोगिनी का चयन करने की ठानी। सुनीता को आशा सहयोगिनी के रुप में एक ऐसी महिला खोजनी थी जो प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की हुई हो, जिसमें काम करने का उत्साह हो और जो इस इलाके की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक जातिवाद के पिंजड़े से परे हट कर सोचती और समझती हो। यह सभी खूबियां उसे डेलासर गांव की युवती सुगना कॅवर में दिखी। सुनीता ने आशा सहयोगिनी बनने का प्रस्ताव सुगना के समक्ष रखा। सुगना खुशी–खुशी इस पर तैयार हो गई, लेकिन एक बड़ी समस्या अब सामने आ गई थी। सुगना के परिवारजन ने उसे आशा के रुप में कार्य करने से मना कर दिया। जब सुनीता ने इसका कारण जानना चाहा तो परिवार ने इसके दो कारण दिये। पहला तो सुगना जाति से राजपूत है। गांव में स्थित राजपूत परिवार की यह धारणा थी कि राजपूत अपने घर में महिलाओं से न तो नौकरी करवाते हैं और न ही कोई सार्वजनिक कार्य। दूसरा गांव में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग भी रहते है। ऐसे में राजपूत होने के कारण वह कैसे उन जातियों के लोगों की इलाज में सहायता कर सकती है। सवाल जाति की प्रतिष्ठा का था। सुनीता ने इस समस्या का समाधान अपने आपको उदाहरण पेश करते हुए निकाला। उसने सुगना के पति पूनम सिंह और पूरे परिवार से इस बारे में बात की। सुनीता ने पूनम के परिवार को बताया कि वह खुद राजपूत परिवार से है और ठीक इसी तरह की समस्या उसके समक्ष भी आई थी जब वह ए.एन.एम.के लिये नियुक्त हुई थी, लेकिन उसके परिवारजनों ने उसे समझा और आज उसके कार्यों की सराहना दूसरों के समक्ष करते हैं। सुनीता ने पूनम के परिवार को बताया कि समुदाय की सेवा करने जैसा पवित्र कार्य इस दुनिया में कोई नहीं है। जबकि इस कार्य को करने से महिला की समुदाय के बीच एक पहचान बनती है और वो आगे चलकर ग्राम प्रधान आदि बनकर अपने गांव की खुशहाली के लिये विभिन्न निर्णय भी ले सकती है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन सभी कार्यों को करने के लिये लोगों का समर्थन उसे हमेशा मिलेगा। सुनीता की बात को पूनम के परिवार ने समझा और सुगना को आशा के रुप में अपने समुदाय को स्वास्थ्य और खुशहाल बनाने के लिये अपनी सेवा देने की मंजूरी दे दी।

सुगना के आशा सहयोगिनी के पद पर चयन होने के बाद उसका प्रशिक्षण जरुरी था। उरमूल ट्रस्ट द्वारा समय–समय पर संचालित प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से सुगना को विभिन्न दौरों में 17 दिन का प्रशिक्षण दिया गया। सुगना को प्रशिक्षण के साथ–साथ एक दवा–पेटी भी दी गई। जिसकी सहायता से वह महिलाओं और बच्चों, व समुदाय के लोगों को सामान्य बीमारी जैसे बुखार, दस्त लगने, चोट लग जाने पर प्राथमिक उपचार दे सके।

प्रभावी वी.एच.एस.सी. का गठन– आशा सहयोगिनी के चयन के बाद डेलासर में लोगों को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ पहुंचाने और डॉक्टर से इलाज करवाने की समझ पैदा करने के लिये प्रभावी वी.एच.एस.सी. का गठन किया गया। प्रभावी वी.एच.एस.सी. में इस बार गांव के वार्ड पंच रेश्मा राम, उप सरपंच शान्ति देवी, ऑगनबाड़ी कार्यकर्ता जमुना देवी, गांव की समस्याओं के समाधान और लोगों की मदद के लिये हमेशा प्रयासरत दो विद्यार्थी प्रेमा राम और मांगे लाल के साथ–साथ आशा सहयोगिनी सुगना कँवर और ए.एन.एम. सुनीता सिंह सदस्य के रुप में शामिल हुईं। उरमूल ट्रस्ट के कार्यकर्ता अनूप भी सदस्य के तौर पर शामिल हुये। इसके बाद गांव की समस्याओं को लेकर डेलासर की वी.एच.एस.सी. ने काम करना शुरु कर दिया।

वी.एच.एस.सी. की कार्यप्रणाली– वी.एच.एस.सी. के गठन के बाद सभी सदस्यों ने मिलकर समूह में एकता के साथ काम करने का निर्णय लिया। आशा सहयोगिनी सुगना को प्रशिक्षण के दौरान यह बताया गया था कि वह अपने गांव में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर सबके साथ मिलकर एक योजना बना काम को सफलता से अंजाम दे सकती है। सुगना और समिति के सदस्यों को उरमूल ट्रस्ट ने विलेज हैल्थ प्लान किस तरह से बनाया जाये इसका प्रशिक्षण दिया था। जो समिति की योजनाओं में काम आया। समिति ने मिलकर अपने गांव की प्रमुख समस्याओं से निजात पाने को ध्यान में रखते हुये उन्हें क्रम से रखना शुरु कर दिया, समस्याओं को इकट्ठा कर विलेज हैल्थ प्लान बनाया गया।

मासिक बैठक– सुगना ने सभी सदस्यों से संपर्क किया और यह तय हुआ की वह हर महीने कि 6 तारिख को उप स्वास्थ्य केंद्र पर मिलकर बैठक करेंगे। इस बैठक में वह अपने गांव के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को रखेंगे और उस मुद्दों से उभरने के लिये योजना के तहत कार्यप्रणाली बनाई जाएगी। पहली बैठक में गांव से संबंधित विभिन्न मुद्दे निकलकर सामने आये। जो की गांव की साफ–सफाई से लेकर मलेरिया से बचाव, गर्भवती महिलाओं की जांच, बच्चों की वजन निगरानी और टीकाकरण, कुपोषण से लड़ना, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण और संस्थागत प्रसव से लाभ मिलना आदि है। बैठक में यह तय किया गया कि गर्भवती की जांच और उसे दवाईंयां और पोषक आहार देना, बच्चों की वजन निगरानी और टीकाकरण, आंगनबाड़ी से बच्चों, किशोरियों और धात्री महिलाओं को जोड़ना और उनका पंजीकरण, पोषाहार का सुचारु रुप से वितरण और स्टॉक की देखरेख जैसे बिंदुओं पर प्रत्येक महीने चर्चा की जायेगी। जबकि मलेरिया व मौसम के साथ आने वाले रोगों से पहले आने वाले महीनों में एक कार्य योजना बनाकर उन रोगों से निपटा जायेगा। इसके अलावा एच.आई.वी. एड्स, तपेदिक जैसी बीमारियों पर समय–समय पर चर्चा की जायेगी।

डेलासर ग्राम स्वास्थ्य योजना जनवरी 2011 से नवंबर 2011 तक

क्र.सं.	स्वास्थ्य के घटक	गत वर्ष की स्थिति	आगामी लक्ष्य	लक्ष्य प्राप्ति हेतु गतिविधियां	आवश्यक संसाधन	समयावधि	जिम्मेदारी
1	सम्पूर्ण टीकाकरण	50 प्रतिशत	80 प्रतिशत	एम.सी.एच.एन. दिवस पर सेवाएं उपलब्ध कराना, घर–घर जाकर लोगों को जाग–रुक करना	ए.एन.एम., आशा की सेवाएं, प्रचार के लिए अनटाइड फंड से 100 रुपये	हर माह	ए.एन.एम., आशा ऑ.कार्य., उरमूल कार्यकर्ता
2	गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांच	70 प्रतिशत	90 प्रतिशत	एम.सी.एच.एन. दिवस पर सेवाएं उपलब्ध कराना, जटिल प्रसव को रैफर करना	ए.एन.एम., आशा की सेवाएं और अनटाइड फंड का प्रयोग	हर माह	ए.एन.एम., आशा और ऑ.कार्य.
3	प्रसव बाद जांच	20 प्रतिशत	70 प्रतिशत	एम.सी.एच.एन. दिवस पर सेवाएं उपलब्ध कराना, जटिल प्रसव को रैफर करना	ए.एन.एम., आशा की सेवाएं और व्यक्तिगत संपर्क	हर माह	ए.एन.एम. और आशा
4	संस्थागत प्रसव	60 प्रतिशत	90 प्रतिशत	घर–घर जाकर जननी सुरक्षा योजना का लाभ और संस्थागत प्रसव का महत्व बताना	ए.एन.एम., आशा और ऑग.कार्य. की सेवाएं, जे.एस.वाई. फंड का प्रयोग, बैठक और व्यक्तिगत संपर्क	हर माह	ए.एन.एम. और आशा
5	नसबंदी / कॉपर–टी	30 प्रतिशत	60 प्रतिशत	परिवार नियोजन कैंप और सरकारी योजनाओं की जानकारी देना, छोटे परिवार का महत्व बताना	ए.एन.एम., आशा की सेवाएं, बैठक और व्यक्तिगत संपर्क	हर माह	ए.एन.एम. और आशा
6	मलेरिया	65 प्रतिशत	शून्य	रोगी के खून की जांच दवाई का छिड़काव, सफाई और मिट्टी का पड़ाव	ए.एन.एम., आशा की सेवाएं, अनटाइड फंड का प्रयोग	जून–जूलाई अक्टूबर–नवंबर	ए.एन.एम., आशा और पंचायत
7	कुपोषण	30 प्रतिशत	शून्य	वजन निगरानी, पोषाहार वितरण, पर्चे और स्वास्थ्य दिवसों पर जागरुक लोगों को करके	ए.एन.एम., आशा की सेवाएं, अनटाइड फंड से वजन मशीन खरीदना	हर माह, 15 दिन	आशा, ऑ.कार्य. और उरमूल कार्यकर्ता

डेलासर ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति के सदस्यों का ब्यौरा

क्र.स.	नाम	पद	समिति में पद	लिंग	शिक्षा	फोन न.
1	रेश्माराम	वार्ड पंच	अध्यक्ष	पुरुष	साक्षर	9414802415
2	शान्ति देवी	उप सरपंच	सदस्य	महिला	साक्षर	9517940815
3	मांगेलाल	ग्रामीण	सदस्य	पुरुष	स्नातक	9517940815
4	प्रेमाराम	ग्रामीण	सदस्य	पुरुष	स्नातक	
5	जमुना देवी	ऑगन. कार्य.	सदस्य	महिला	पांचवी पास	9414802415
6	सुनीता सिंह	ए.एन.एम.	सदस्य	महिला	स्नातक	9950282511
7	सुगना कॅवर	आशा	सचिव	महिला	आठवी पास	9001911431
8	अनूप	उरमूल कार्यकर्ता	सदस्य	पुरुष	उच्च माध्यमिक	9928723969

बैठक में गांव की स्वास्थ्य योजना बनाई गई। जिनमें गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांच, संस्थागत प्रसव, पूर्ण टीकाकरण, नसबंदी और कॉपर टी, किशोरियों और बच्चों का ऑगनबाड़ी में पंजीकरण, जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण, मलेरिया की रोकथाम आदि बिंदुओं को शामिल किया गया। ए.एन.एम. सुनीता सिंह के पास मौजूद ऑकड़ों को रखकर गत वर्ष की स्थिति का पता लगाया गया। गांव को स्वस्थ बनाने और इन गंभीर मुद्दों से उभारने के लिये इस वर्ष का लक्ष्य रखा गया। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिये ग्राम स्वास्थ्य योजना में दर्शाई गई गतिविधियों को निर्धारित किया गया। गतिविधियों को निर्धारित करने की मुख्य बात यह रही कि उसमें गांव में उपलब्ध संसाधनों को ही ध्यान में रखा गया। विभिन्न मुद्दों से निपटने के लिये एक निश्चित समयावधि तय की गई और मुद्दों की नाजुकता को देखते हुये सभी ने सहमति से जिम्मेदारियों को आपस में तय कर लिया। ग्राम स्वास्थ्य योजना की कॉपी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और ब्लॉक के मुख्य चिकित्सा अधिकारी और ग्राम पंचायत को भी भिजवाई गई। ग्राम सभा में इन योजनाओं को पढ़कर भी सुनाया गया, जिससे कि स्वास्थ्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये समुदाय का भरपूर सहयोग मिल सके। गतिविधियों को पूरा करने के लिये समिति ने अपने अनटाइड फंड का वार्षिक बजट भी बनाया। बैठक में सामने आये बिंदुओं को बैठक कार्यवाही रजिस्टर में दर्ज किया गया और बैठक में भाग लेने वाले सभी सदस्यों के इस पर हस्ताक्षर लिये गए। ए.एन.एम. सुनीता सिंह ने आशा सहयोगिनी सुगना कॅवर के साथ मिलकर सभी संभावित गर्भवती और धात्री महिलाओं, शिशुओं की सूची बनाई गई। इसके अलावा उन सभी बच्चों और किशोरियों की सूची बनाई गई जिनका आगनबाड़ी में पंजीकरण नहीं हुआ है। एक सूची उन दंपतियों की भी तैयार की गई जिनके दो से ज्यादा बच्चें हैं। ताकि उन्हें परिवार नियोजन के लिये प्रेरित किया जा सके। मातृ–शिशु स्वास्थ्य पोषण दिवस हर महीने के दूसरे सप्ताह के गुरुवार को करना तय किया गया।

समिति के काम की शुरुआत

लोगों को जागरूक करना– डेलासर की समिति ने अपने मुद्दों को जान लिया था और उनसे उभरने विभिन्न गतिविधियों की योजना भी बना ली थी, लेकिन उसे अमली–जामा पहनाने का काम बड़ी मशक्कत का था। इसका मुख्य कारण ग्रामीण लोगों का आधुनिक चिकित्सा को लेकर डर और अंधविश्वास था। वह यह मानते थे कि टीकाकरण आदि से उनके पूजनीय उनसे रुष्ट हो जायेंगे। लोगों को इससे उभारने के लिये स्वास्थ्य समिति को जरुरत थी कि वह लोगों को इसके प्रति जागरुक करें। ए.एन.एम. सुनीता सिंह, आशा सुगना, ऑगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहयोगिनी सहित वी.एच.एस.सी के सदस्यों ने घर–घर जाकर लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं और आधुनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति जागरुक करना शुरु कर दिया। उन्होंने लोगों को बताया कि कैसे वह अपनी गर्भवती बहू का ख्याल रखकर, उसे संपूर्ण पोषण वाला आहार देकर स्वस्थ बच्चे के जन्म में सहायता कर सकते हैं। बच्चों को गंभीर रोगों से बचाने के लिये टीकाकारण जरुरी है। टीकाकरण के बाद बुखार आना या सूजन आना कोई देवीय प्रकोप नहीं बल्कि टीकाकरण का प्रभावी रुप से सफल होने का ही एक भाग है। इसके अलावा कैसे परिवार नियोजन अपना कर हम अपने परिवार को स्वस्थ, साक्षर और खुशहाल रख सकते हैं। उरमूल ट्रस्ट की गावणियार टीम ने कठपुतली के खेल, नाटक और गीतों के माध्यम से लोगों को जागरूक करना शुरु कर दिया।

गांव में मातृ एवं शिशु पोषण दिवस का आयोजन करना–एन.आर.एच.एम. की दिशा–निर्देशानुसार ए.एन.एम. सुनीता ने वी.एच.एस.सी. के साथ मिलकर गांव में मातृ एवं शिशु पोषण दिवस को शुरु करने की ठानी। महीने के बीच में पड़ने वाले एक गुरुवार को इस दिवस का आयोजन उप स्वास्थ्य केंद्र पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया, और इसी दिन मासिक बैठक करने का भी निर्णय लिया गया। आशा सुगना कॅवर ने इस दिवस की जानकारी सभी घरों में जा–जाकर महिलाओं को दी। साथ ही यह भी कहा कि वह इस दिन घर का सारा काम जल्द से जल्द निपटा कर वहां जरुर आयें। सुगना ने परिवार की बड़ी–बुजुर्ग महिलाओं को अपनी बहूओं को साथ लाने को कहा।

डेलासर में मनाया गया मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस– मातृ शिशु स्वास्थ्य एंव पोषण दिवस के दिन डेलासर की वी.एच.एस.सी. के सभी सदस्य उप स्वास्थ्य केंद्र पर सुबह पहुंच गये। आशा सुगना ने सभी घरों में जाकर एक बार पुनः संभावित गर्भवती महिलाओं, योग्य दंपतियों, स्तनपान कराने वाली महिलाओं और ऐसी महिलाओं को अपने बच्चों के साथ लाने को कहा जिनके बच्चे की उम्र 3 साल से कम है। इसके अलावा गांव की किशोरियों को भी बुलावा दिया गया।

पंजीकरण– महिलाओं के आते ही ए.एन.एम. सुनीता सिंह ने अपने रजिस्टर में उनका नाम, उम्र व अन्य विवरण दर्ज करना शुरु कर दिया। बच्चों के भी नाम और उम्र व अन्य विवरणों को सुनीता ने रजिस्टर में दर्ज कर लिया।

जांच– पंजीकरण के बाद जांच शुरु की गई। उप स्वास्थ्य केंद्र पर मौजूद बेबी वेट मशीन की सहायता से बच्चों और बड़ों का वजन बताने वाली मशीन की सहायता से महिलाओं का वजन लेकर रजिस्टर में मौजूद उनके कॉलम में उनके वजन को दर्ज किया गया। वजन निगरानी के बाद सभी महिलाओं का बल्ड प्रेशर माप कर रजिस्टर में दर्ज किया गया। ए.एन.एम. सुनीता ने गर्भवती महिलाओं के पेट की जांच करने के बाद योग्य गर्भवती महिलाओं के खून के सैंपल लिये जबकि योग्य महिलाओं को टिटनेस का टीका भी लगाया गया। इसके बाद शिशुओं का कार्ड जांच कर उन्हें टीके लगाये गये। आशा सुगना ने जांच के बाद गर्भवती महिलाओं को आयरन की गोलियां दी, साथ ही यह भी कहा कि इस गोली को वह रात में सोने से पहले लें। स्तनपान कराने वाली महिलाओं और नवजात शिशु के साथ आई महिलाओं को सुगना और सुनीता ने स्तनपान करने के तरीकों के बारे में बताया और साथ ही बच्चे को अपने साथ करवट में लेकर सुलाने और लिटाने की सलाह भी दी। वहीं वी.एच.एस.सी. के अन्य पुरुष सदस्यों ने सेंटर पर आये पुरुषों से बातचीत जारी रखी। उन्होंने सलाह दी कि वह परिवार नियोजन पर ध्यान दें और कन्डोम का प्रयोग करें। उन्हें एच.आई.वी., एड्स, बुखार आने पर दूसरे दिन ही खून की जांच कराने जैसी सलाह दी गई। साथ ही इस बात पर भी जोर दिया कि गया कि वह अपनी बेटी की तब तक शादी न करें जब तक की वह उम्र में 18 वर्ष से अधिक की नहीं हो जाती। जिन गर्भवती महिलाओं के पति वहां मौजूद थे, उन सभी को यह समझाया गया कि अस्पताल में प्रसव कराना मां और बच्चे दोनों के लिये लाभदायक है और अस्पताल में प्रसव मुफ्त होने के साथ–साथ महिला और बच्चे को सरकार द्वारा संचालित जननी सुरक्षा योजना का लाभ भी मिलेगा। कमजोर पाये गये बच्चों की माताओं को विटामिन ए पाउडर वाला पैकेट, ओ.आर.एस घोल के पैकेट, पेट के कीड़ों की दवा दी गई। बच्चे को पूर्ण स्तनपान के साथ–साथ पोषाहार देने पर भी जोर दिया गया।

आश सुगना बच्चे का वजन लेती हुई

लोग हुये जागरुक, मलेरिया से निपटने की बनाई योजना– वैसे तो इस इलाके में बारिश बहुत कम ही होती है, लेकिन बावजूद इसके मलेरिया का प्रकोप यहां एक महामारी की तरह उभरता है। डेलासर के लोगों ने मलेरिया से निपटने के लिये पहले से ही योजना बना ली। वी.एच.एस.सी. की बैठक से पहले गांव में यह संदेशा दिया गया कि इस बार मलेरिया से निपटने की योजना बनाई जायेगी। वी.एच.एस.सी. के सदस्य प्रेमा राम और मांगेलाल ने गांव के व्यक्तियों को बैठक में आने के लिये कहा। नतीजन बैठक के दौरान गांव के करीब 28 लोग बैठक में आये और मलेरिया से निपटने की योजना बनाई गई। निर्णय लिया गया कि सभी के पानी के टांकों के आसपास सफाई की जायेगी और टांकों में टेमीफोस की दवाई डाली जायेगी। गांव के पास स्थित कीकर में भी मच्छर पैदा होते हैं इसलिये उनकी कटाई की जाये। बैठक के दूसरे दिन सभी गांव के लोग इक्कठा हुये और उन्होंने अपने अपने टांकों के आसपास सफाई शुरु कर दी। टांकों के आसपास गीली जगह पर मिट्टी डाली गई, ताकि वहां सूखा रहे। गांव में जिन जगहों पर पानी इकट्ठा होता था, उन जगहों पर मिट्टी का पटाव किया गया। गांव के कुछ युवाओं ने आसपास और गांव के बीच स्थित कीकर को काट दिया। सभी टांकों में टेमीफोस की दवाई डाली गई। ए.एन.एम. सुनीता ने सभी लोगों को सलाह दी कि अगर उन्हें बुखार आता है तो वह उससे या सुगना से आकर बुखार की दवा लें। अगर तीन दिन में भी बुखार न उतरे तो तुरंत खून का सैंपल देने सेंटर पर आयें। इस जागरुकता के बाद लोगों ने बुखार होने पर उप स्वास्थ्य केंद्र पर आकर इलाज कराना शुरु कर दिया। इसमें कई बार ए.एन.एम. सुनीता को दिक्कतों का सामना भी करना पड़ा क्योंकि कई बार सिर्फ बुखार होने पर भी गांव के लोग खून की जांच कराने पर जोर देने की बात करते।

परिवार नियोजन की पहल हुई– ए.एन.एम.सुनीता बताती हैं कि इस गांव में जहां लोग परिवार नियोजन की बात करने पर लड़ाई–झगड़ा करने को तैयार हो जाते थे वह अब परिवार नियोजन की तरफ बढ़ रहे हैं। हालांकि गांव की कुछ महिलायें पहले से ही गर्भनिरोधक गोलियों का उपयोग करती आ रही है, लेकिन अब अधिकतर महिलाओं ने गर्भनिरोधक गोलियों को उपयोग में लाना शुरु कर दिया है। सभी महिलायें सुनीता से परामर्श के बाद ही इन गोलियों का सेवन करती है। एक बड़ा बदलाव जो देखने में आया वो है पुरुषों द्वारा कंडोम का प्रयोग। सुनीता बताती है कि महिला होने के नाते पुरुष उनसे कंडोम आदि लेने में हिचकिचाते थे। पहले महिलायें ही कंडोम लेकर जाती थी, या फिर समिति के सदस्य गांव के लोगों को कंडोम देते थे, लेकिन अब परिस्थितियां बदल गई हैं। जागरुकता अभियान और परिवार नियोजन के प्रचार–प्रसार के बाद लोग अब उनसे कंडोम लेने स्वयं ही आते हैं। हालांकि कुछ लोगों को इसमें हिचकिचाहट होती हैं, इसके लिये वह अपने दोस्तों के साथ आते हैं। सुनीता सभी को यही कहती हैं कि वह इस बारे में शर्म न करें। सुनीता बताती है कि महिलाओं को तो कॉपर टी लगवाकर आपरेशन कराने के लिये परिवार राजी हो जाया करता था, लेकिन पुरुष नसबंदी के लिये तैयार नहीं होते थे। समिति और स्वैच्छिक संस्थानों के प्रयासों का नतीजा है कि अब गांव के लोगों ने नसबंदी के लिये खुशी–खुशी तैयार होना शुरु कर दिया है। कई पुरुषों ने तो दो से तीन बच्चों के होने के बाद ही नसबंदी करवा ली है। नसबंदी कराये हुये व्यक्ति अपने गांव ही नहीं बल्कि पास के अन्य गांवों में भी, अपने दोस्तों को इसके लिये प्रेरित कर रहे हैं।

डेलासर ने मनाया पहली बार विश्व स्तनपान सप्ताह– मां का दूध बच्चे के लिये अमृत समान होता है। मां का पहला पीला गाढ़ा दूध जिसे खींस कहा जाता है बच्चे को कई बीमारियों से दूर रखता है। स्तनपान कराने से बच्चा स्वस्थ और मजबूत बनता है। बच्चे को छः महीने तक केवल मॉ का ही दूध पिलाना चाहिए। अगर कोई भी महिला गर्भवती हो तो परिवार को उसका विशेष ध्यान रखना चाहिये । कठपुतली के नाटक, लोकगीतों और नृत्य के माध्यम से डेलासर के लोगों के बीच इन बातों को रखा उरमूल ट्रस्ट की गावणियार टीम ने। जो पूरे जिले में विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान गांव–गांव में जाकर ग्रामीणों के बीच स्तनपान के महत्व को बता रही थी। 1 से 7 अगस्त तक जैसलमेर जिले के अन्य गांवों की तरह ही डेलासर गांव ने भी पहली बार विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया। इस मौके पर वी. एच.एस.सी. के सभी सदस्यों ने घर–घर जाकर पूरे परिवार को 4 अगस्त को गांव में स्थित उप स्वास्थ्य केंद्र पर आने का न्यौता दिया। 4 अगस्त की सुबह गावणियार टीम ने पूरे गांव में ढ़ोल बजाकर लोगों को स्वास्थ्य केंद्र पर आने को कहा। गांव के परिवार स्वास्थ्य केंद्र पर इकट्ठा होने शुरु हो गये। इसके बाद कठपुतली का नाटक, लोकगीत और नृत्य के माध्यम से लोगों के बीच स्तनपान का महत्व बताया गया। शिशुओं को जन्म से 6 महीने तक केवल और केवल अपना दूध पिलाने पर जोर दिया गया। इस मौके पर उरमूल ट्रस्ट के सहयोग से वी.एच.एस.सी. ने एक प्रतियोगिता का आयोजन भी किया। जिसमें महिलाओं से स्तनपान को लेकर सवाल पूछे गये। सही जवाब देने वाली महिलाओं को पुरस्कार दिया गया। अपने बच्चों को छः महीने तक सिर्फ स्तनपान कराने वाली महिलाओं को उनके सराहनीय कार्य के लिये पुरस्कार स्वरुप दीवार घड़ी, फोटो फ्रेम आदि वी.एच.एस.सी. सदस्यों द्वारा दिये गये। इस मौके पर मौजूद गांव के पुरुषों से भी संस्थागत प्रसव, गर्भवती महिलाओं की देखरेख और अस्पताल में इलाज कराने से होने वाले लाभ के बारे में सवाल प्रतियोगिता की गई। आशा सहयोगिनी सुगना ने फ्लिप बुक के माध्यम से महिलाओं को गर्भ से लेकर प्रसव और प्रसव पश्चात सभी तरह की ध्यान रखने योग्य बातों को समझाया।

समिति के कार्य से गांव में आये बदलाव– उरमूल ट्रस्ट और सहयोगी संस्था सेव द चिल्ड्रन द्वारा समितियों के सदस्यों को प्रशिक्षण और समय–समय पर मार्गदर्शन देने का यह फायदा हुआ कि अब डेलासर में

- ★ गांव में स्वास्थ्य को लेकर लोग जागरुक हो गये हैं।
- ★ समिति की नियमित बैठकें होने लगी है जिसमें स्वास्थ्य एव पोषण सेवाओं की समीक्षा होने लगी है।
- ★ अनटाइड फण्ड का उपयोग होने लगा है। जैसे –बच्चों और बड़ों का वजन लेने वाली मशीन गांव में आशा के पास मौजूद है, जबकि आगनबाड़ी में पेयजल को स्वच्छ करने का फिल्टर खरीदा गया है।
- ★ लोगों में संस्थागत प्रसव को लेकर समझ बनी है। जबकि परिवार नियोजन अपनाने के लिये लोगों ने खुद कदम उठाना शुरु कर दिया है।
- ★ मलेरिया नियंत्रण को लेकर विभिन्न कार्यक्रम वीएचएससी के द्वारा किये जा रहे है।
- ★ समय समय पर आयोजित होने वाले विश्व स्तरीय स्वास्थ्य दिवसों और सप्ताहों का आयोजन अब डेलासर में भी होने लगा है। जैसे निमोनिया अभियान, विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन, विश्व पोषाहार सप्ताह, विश्व जनसंख्या दिवस आदि का आयोजन होना शुरु हो गया है। इन कार्यक्रम में गांव के लोगों की रुचि भी बढ़ गई है।

वी.एच.एस.सी. की सर्तकता से होशियार को मिला नया जन्म

होशियार मॉ राशला की गोद में

पांच साल के अंदर एक बेटा, एक बेटी को जन्म देने के बाद डेलासर निवासी, दो बच्चों को जन्म दे चुकी, राशला कॅवर ने तीसरे बच्चे,होशियार को जन्म दिया। जन्म से ही होशियार अति कुपोषित था। मातृ एवं शिशु दिवस पर वजन निगरानी के दौरान होशियार की हालत चिंताजनक दिखी। सुनीता ने राशला को भरपूर पौष्टिक आहार लेने के साथ–साथ होशियार को नियमित और केवल स्तनपान कराने की सलाह दी। निरंतर वजन निगरानी और राशला के केवल स्तनपान कराने के बावजूद जब होशियार की हालत में सुधार नहीं हुआ तो सुनीता ने उसे मोहनगढ़ स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पी.एच.सी.) में होशियार का इलाज करवाने की सलाह दी। आशा सहयोगिनी सुगना, होशियार की मां राशला और पिता छाबर सिंह के साथ मोहनगढ़ स्थित पीएचसी पर इलाज के लिये होशियार को लेकर गई। पी.एच.सी पर मौजूद चिकित्सकों ने होशियार का इलाज शुरु कर दिया। होशियार की हालात में जब सुधार न होता दिखा तो चिकित्सकों ने उसे जैसलमेर स्थित जिला अस्पताल ले जाकर इलाज करवाने की सलाह दी। उरमूल ट्रस्ट के प्रतिनिधि अनूप ने आशा सुगना और होशियार के परिजनों के साथ होशियार को जिला अस्पताल में भर्ती करवाया। जहां डॉक्टरों की निगरानी में उसका इलाज चला। करीब 8 दिन बाद डॉक्टरों ने होशियार को अस्पताल से छुट्टी दे दी।छुट्टी के समय डॉक्टरों ने राशला को घर में साफ–सफाई रखने के साथ स्वच्छ पेयजल और भरपूर मात्रा में ताजा और पौष्टिक भोजन लेने की सलाह दी। डॉक्टरों ने सुगना को भी होशियार की निरंतर वजन निगरानी और समय–समय पर जांच करने की सलाह दी। होशियार को घर लाया गया। जिसके बाद परिवार द्वारा पालनपोषण और सुगना के निरंतर निगरानी के साथ ही होशियार आज पूरी तरह से स्वास्थ है। वी.एच.एस.सी. के इस प्रयास की सराहना और इस अच्छे कार्य को देखने के लिये जैसलमेर की जिला अधिकारी सहित स्वास्थ्य विभाग से संबंधित अन्य अधिकारी भी उसे देखने आये। होशियार अब 9 माह का है। सुनीता ने बताया कि वजन निगरानी के बाद गांव के 6 और शिशु कुपोषित पाये गये। वी.एच.एस.सी. के प्रयासों और परिजनों को उचित देखभाल के बाद वह 6 बच्चे भी अब पूर्ण रुप से स्वस्थ हैं।

भोजका गांव में आया बदलाव, पहली बार हुआ टीकाकरण

स्वास्थ्यकर्मी काली देवी

राजस्थान के जैसलमेर जिले से करीब 40 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग–15 पर स्थित भोजका गांव में इस साल की शुरुआत में वी.एच.एस.सी. का गठन किया गया। भोजका 7 किलोमीटर में फैला गांव है जहां के लोग ढ़ांणियों (खेतों में बने घर) में रहते हैं। इस इलाके में कुल 38 ढ़ाणियां है। जिसमें 1000 से ज्यादा पुरुष, महिलायें और बच्चे रहते हैं। रेगिस्तान के इस दुर्गम इलाके में जहां एक घर दूसरे घर से लगभग एक से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित हो, सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुंचाना बहुत ही मुश्किल काम था। इलाके में नियुक्त ए.एन.एम. खेवणी देवी का इस इलाके में आना न के बराबर ही था।

वी.एच.एस.सी. का गठन– भोजका गांव की ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति में वार्ड पंच सलीमा, ए.एन.एम. खेवणी देवी, नैनाराम, काली देवी, आईदान राम, अमरदीन, श्रवण कुमार सदस्य हैं। समिति के सदस्य ढ़ांणियों में रहने वाले लोगों से परिचित है और स्वास्थ्य समस्याओं को समझते है। इन सभी सदस्यों में यह बात एकता से कार्य का एक बड़ा उदाहरण सामने लाती है कि यह सभी अपने इलाके के विकास के बारे में सोचते हैं और विकास के लिये तत्पर प्रयास कर रहे हैं। वी.एच.एस.सी. के सदस्यों को उरमूल ट्रस्ट के प्रतिनिधियों द्वारा ट्रेनिंग दी गई। काली देवी को सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रुप में विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया।

मासिक बैठक– वी.एच.एस.सी. के गठन के बाद काली देवी ने सभी को सूचित कर महीने के एक दिन अपने निवास पर ही बैठक का आयोजन किया। बैठक में निर्णय लिया गया कि सभी संभावित गर्भवती महिलाओं की जांच की जायेगी, ए.एन.एम.की मदद से एक स्थान पर सभी ढ़ाणियों से शिशुओं को लाकर उनका टीकाकरण कराया जायेगा। मातृ एव शिशु दिवस के लिये सोमवार का दिन रखा गया।

समिति ने बदली समुदाय की मानसिकता– सोमवार के दिन सभी ढ़ांणियों से नैनाराम, आईदान, अमरदीन और श्रवण कुमार ने परिवारों को लाना शुरु कर दिया। ए.एन.एम. खेवणी देवी ने भी इकट्ठा हो रही महिलाओं और शिशुओं का पंजीकरण, रजिस्टर में करना शुरु कर दिया। इसके बाद काली देवी ने सभी महिलाओं की जांच शुरु कर दी। सभी योग्य महिलाओं को आयरन की गोली दी गई और टिटनेस का टीका लगाया गया। शिशुओं और बच्चों का वजन लिया गया और उनको टीके लगाये गये। अगले दिन ही काली देवी, नैनाराम और वी.एच.एस.सी. के सदस्यों के घर पर लोग इकट्ठा हो गये। गांव के सभी लोग उनसे झगड़ने लगे। दरअसल, टीकाकरण के प्रभाव से कुछ बच्चों में बुखार आ गया। इस बुखार को उन्होंने देवी का प्रकोप बताया। इसके लिये उन्होंने वी.एच.एस.सी. के सदस्यों को ही दोषी ठहराया। मातृ एव शिशु दिवस पर आयरन की गोलियां लेकर गई महिलाओं ने आयरन की गोलियों को जहर बताकर फेंक दिया। नैनाराम, कालीदेवी, आईदान राम, अमरदीन और श्रवण कुमार ने मौके पर वार्डपंच सलीमा को बुला लिया। सभी ने मिलकर ग्रामीणों को समझाया कि बच्चों को टीका लगाने के बाद अगर बुखार आता है तो इसका मतलब है कि उसका टीकाकरण सही और प्रभावी तरीके से हुआ है। दवा ने उसपर असर किया है।

जबकि आयरन की गोलियां कोई जहर नहीं है बल्कि शरीर में आयरन की कमी को पूरी करता है। जिसके सेवन से प्रसव के दौरान खून की कमी, एनिमिया जैसी गंभीर समस्या से बचा जा सकता है। इस घटना के बाद से ग्रामीणों में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर विश्वास दिलाने के लिये वीएचएससी के सदस्यों ने योजना बनाई। सबसे पहले सभी ने अपने परिवार और रिश्तेदारों को स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी देनी शुरु कर दी। हालांकि शुरुआत में रिश्तेदारों ने इस पर विरोध जताया। लेकिन परिवार के सदस्य होने के नाते कुछ ही दिनों में समिति के सदस्यों ने उनका आत्मविश्वास जीत लिया। वहीं सलीमा के वार्ड पंच होने के नाते गांव की महिलाएं और पुरुष दोनों ही सलीमा का आदर करते थे। सलीमा ने उन्हें स्वास्थ्य सेवाओं पर विश्वास रखने के बारे में बताया। काली देवी ने गांव के दंपति और बुजुर्ग महिलाओं को आसपास स्थित गांव के उदाहरण देकर बताया कि कैसे पास के गांवों में सही समय पर इलाज होने से बच्चे और मां दोनों की जान बच पाई। समिति के सदस्यों ने लोगों में स्वास्थ्य सेवाओं पर विश्वास करने के उद्देश्य से सुबह–शाम लोगों के घर उनका हालचाल लेने जाना शुरु कर दिया। धीरे–धीरे लोगों ने स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ना शुरु कर दिया। दो से चार और चार से आठ। कुछ इस तरह से ही गांव के लोग एक दूसरे से प्रभावित हुये। शुरुआती समय में लगभग 12 परिवारों ने टीकाकरण और काली देवी से दवाई, ओआरएस घोल लेकर बच्चों को पिलाना शुरु कर दिया। इन परिवार की महिलाओं ने भी अंगों की साफ–सफाई और परिवार नियोजन के लिये गर्भनिरोधक गोलियों का सेवन शुरु कर दिया। जबकि पुरुषों ने भी कंडोम का प्रयोग करना शुरु कर दिया। एक दूसरे से प्रभावित होकर अन्य परिवार भी स्वास्थ्य सुविधाओं को अपनाने के लिये आगे आने शुरु हो गये।

संस्थागत प्रसव बना वरदान, लीला की बची जान

भोजका गांव में वी.एच.एस.सी. सदस्य काली देवी के पड़ोस में रहने वाली लीला देवी पांच बच्चों की मां है। उन्होंने अब परिवार नियोजन अपना लिया है। लीला देवी के जिंदा रहने और अपने बच्चों के पालन पोषण के साथ–साथ वी.एच.एस.सी. के सदस्यों का कार्य में हाथ बटाने का श्रेय वी.एच.एस.सी. के कार्यों को ही जाता है। बात नवंबर 2010 की है, जब लीला देवी गर्भावस्था के अंतिम चरण में थी। सुबह तड़के करीब साढ़े चार बजे लीला देवी को दर्द उठा। सुबह घर के सभी सदस्य नींद में थे। लीला देवी को दर्द से कराहता सुन उठे बच्चों ने रोना शुरु कर दिया। इसी बीच आवाज सुनकर काली देवी भी मौके पर पहुंच गई। उन्होंने लीला की जांच की और पाया कि प्रसव में देरी हो सकती है। वहीं लीला की हालत बिगड़ती ही जा रही थी। काली देवी ने तुरंत अपने पति और वी.एच.एस.सी. सदस्य नैना राम को गाड़ी का इंतजाम करने को कहा। नैना राम ने फोन कर पास के गांव में ही गाड़ी चलाने वाले एक युवक को गाड़ी के साथ बुला लिया। लीला को तुरंत जैसलमेर स्थित जिला अस्पताल लेकर जाया गया। जहां डॉक्टरों ने तुरंत ऑपरेशन करके प्रसव में कामयाबी पाई। डॉक्टरों का कहना था कि समय रहते लीला को अस्पताल लेकर आने से उसकी जान बच गई। प्रसव के बाद काली देवी ने एक अच्छे पड़ोसी और एक वी.एच.एस.सी. सदस्य होने के नाते न लीला की देखरेख की। उसे भरपूर पौष्टिक भोजन व दवाईयां भी दी । लीला देवी को शिशु को केवल व भरपूर स्तनपान भी करवाया। करीब 7 महीने के बाद लीला देवी ने परिवार नियोजन अपनाते हुये कॉपर टी लगवा ली। आज लीला देवी का बेटा कन्नू 10 महीने का है। वह पूरी तरह से स्वस्थ है।

लीला देवी अपनी बेटी के साथ

डाबला गांव के बदले हालात

जैसलमेर जिले से 18 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग–15 पर स्थित इस गांव में 185 परिवार रहते हैं। जिनकी जनसंख्या 1200 से अधिक है। इस गांव में वी.एच.एस.सी. के गठन के बाद एक बड़ा बदलाव आया। इस गांव के लोगों की जीवनशैली इस तरह थी कि कोई भी स्वस्थ व्यक्ति उनके साथ रहना पसंद ही नहीं करता। महिलाओं और बच्चों का गंदगी से रहना, घर के पुरुषों का नशे में धुत होना इस गांव की पहचान थी। वी.एच.एस.सी. के कार्यों की बदौलत अब हालात बदले नजर आते हैं। लोगों ने अब न सिर्फ अपने घरों बल्कि आसपड़ोस में भी साफ–सफाई रखना शुरु कर दिया है। जैसलमेर से पास होने के बावजूद इस गांव के लोग सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं से दूर थे, लेकिन अब उन्होंने टीकाकरण, संस्थागत प्रसव, परिवार नियोजन और सरकारी अस्पताल में इलाज कराना शुरु कर दिया है।

समिति लाई खेवाराम के घर में खुशियां

मां जमना की गोद में लोकेश

डाबला गांव के खेवाराम की जमना से करीब 8 साल पहले शादी हुई थी। दोनों का ही बाल विवाह हुआ था। जमना ने 8 सालों में चार बच्चों को जन्म दे दिया। खेवाराम पेशे से मजदूर है। बड़ा परिवार होने के कारण वह परिवार का भरण–पोषण करने में असमर्थ रहा। गर्भावस्था और प्रसव के बाद जमना की उचित देखभाल न होने के कारण जमना सहित उसके बच्चे भी कुपोषण का शिकार हो गये। मां–बच्चे का इलाज करवाने के लिये उनका परिवार अस्पताल न जाकर गांव से दूर स्थिति एक ओझा के पास गया। झाड़–फूंक का झांसा देकर ओझा उनसे पैसे ऐंठने लगा। वह उनसे हर तीसरे दिन मांस और मदिरा मंगवा कर पूजा करने का झांसा देता। जमना और उसके बेटे लोकेश की हालात और भी ज्यादा बिगड़ने लगी। इस बात की खबर गांव में रहने वाली सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता ढाका को लगी। उसने तुरंत वी.एच.एस.सी. के सदस्यों को इसकी सूचना दी। इलाके में वी.एच.एस.सी. के साथ काम कर रही स्वैच्छिकसंस्था उरमूल ट्रस्ट के प्रतिनिधियों को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने तुरंत गांव में पहुंच कर परिवार को समझाना शुरु कर दिया। तीन दिन तक सभी सदस्यों को परिवार को मनाने में नाकामी हासिल हुई। गांव के बड़े–बुजुर्गों से वी.एच.एस.सी. के सदस्यों ने बात की जिनके दबाव देने पर खेवाराम के परिवार ने जमना और उसके बेटे लोकेश को जैसलमेर स्थित अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टरों की निगरानी में इलाज चलने के कुछ ही दिन में दोनों की सेहत में सुधार होने लगा। डॉक्टरों ने दोनों को अस्पताल से छुट्टी दे दी। इस दौरान वी.एच.एस.सी. के सदस्यों ने परिवार को जमना और लोकेश की देखरेख करने के बारे में समझाया। उन्हें बताया गया कि रोजमर्रा की जिंदगी में सुधार लाकर, साफ–सफाई से रहकर, स्वच्छ पेय जल का प्रयोग करके और पोषण युक्त आहार लेकर रोगों से बचा जा सकता है। खेवाराम के परिवार ने इस बात को समझा और उन्होंने अपने घर में स्वस्थ वातावरण बनाना शुरु कर दिया। वी.एच.एस.सी. सदस्यों की लगातार वजन निगरानी, मां और बेटे सहित परिवार के अन्य बच्चों को पोषाहार के साथ दवाईयों दिलवाने के चलते वर्तमान में जमना और उसके सभी चार बच्चे पूर्ण रुप से स्वस्थ है। पूरे परिवार के साथ जमना और खेवाराम के रिश्तेदारों ने भी यह प्रण किया है कि वह कभी भी इलाज के लिये ओझा आदि के पास नहीं जायेंगे। वह हमेशा सरकारी अस्पताल, आशा और ए.एन.एम. से ही इलाज करवायेंगे।

निष्कर्ष

ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति के गठन और उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से मजबूत करने के बाद उनकी कार्यप्रणाली से उनके गांव में रहने वाले लोगों की जीवनशैली में एक भारी बदलाव आया है। जो उनकी रोजमर्रा की जिंदगी को देखकर पता लगाया जा सकता है।

- साफ–सफाई और स्वास्थ्य के साथ जीवनशैली में बदलाव– लोगों ने घरों और आसपड़ोस में सफाई रखनी शुरु कर दी है। गांव में पानी इकट्ठा होने वाली जगहों को मिट्टी से पाट दिया गया है। घर में सफाई के साथ–साथ शारीरिक स्वच्छता पर भी लोग ध्यान देने लगे हैं। स्वच्छ पेय जल का संचय और पेय जल का उपयोग अब लोग अच्छे से करते हैं। लोग घर में ताजा खाना और बने भोजन को ढक कर रखते हैं।
- बच्चों और किशोरियों का आंगनबाड़ी से जुड़ाव– वी.एच.एस.सी. के सदस्यों द्वारा गांव के लोगों में जागरुकता लाने से लोगों ने अपने बच्चों को आंगनबाड़ी से जोड़ना शुरु कर दिया है। जबकि पहले जातीय भेदभाव, आंगनबाड़ी का नियमित न खुलना और लोगों में बच्चों के प्रति संवेदनशीलता न होने के कारण बच्चे आंगनबाड़ी में नहीं आते थे। समिति के सदस्यों द्वारा आंगनबाड़ी में बच्चों को दिया जाने वाला पोषाहार उन्हें भरपूर पोषण देता है। वहीं जहां पहले किशोरियां ऑगनबाड़ी से नहीं जुड़ी हुई थी वह भी अब आगनबाड़ी से स्वास्थ्य सलाह और पोषाहार लेने लगी हैं।
- आशा–ए.एन.एम. और अस्पताल से इलाज कराना– जहां पहले लोग खुद, बच्चे या महिलाओं के बीमार होने पर ओझा या भोपे द्वारा इलाज कराया करते थे अब वही लोग आशा से बुखार, जुकाम, दस्त आदि हो जाने पर दवाई, विटामिन ए, ओ.आर.एस. घोल का पैकेट लेते हैं। शिशुओं को कार्ड की सहायता से समय पर टीका लगवाया जाता है। महिलायें और पुरुष उप स्वास्थ्य केंद्र पर आकर मरहम–पट्टी और इंजेक्शन आदि लगवाने आते हैं। ए.एन.एम.की सलाह पर वह अस्पताल में जाकर अपना इलाज भी कराते हैं। संस्थागत प्रसाव के लिये भी ग्रामीण अब सचेत हो गये हैं। समय रहते महिलाओं को अस्पताल अथवा उप स्वास्थ्य केंद्र ले जाया जाता है। समय अत्याधिक कम होने पर ए.एन.एम. खुद जाकर प्रसव करवाती है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में मिलने वाली सुविधाओं का लाभ लेने के लिये वह वी.एच.एस.सी. के सदस्यों से बातचीत कर अपनी जानकारी को ताजा करते रहते हैं।
- परिवार नियोजन– महिलाओं द्वारा गर्भनिरोधक गोलियां, पुरुषों द्वारा कंडोम का प्रयोग, नसबंदी, कॉपर टी के लिये गांव के लोगों का खुद–ब–खुद सामने आना यह दर्शाता है कि इस गांव के लोग अब परिवार नियोजन को बढ़ावा दे रहे हैं।
- मलेरिया की रोकथाम– लोगों ने मलेरिया की रोकथाम के लिये और दो से तीन दिन बुखार होने पर खुद खून की जांच करवाना शुरु कर दिया है। इससे उनमें रोगों की रोकथाम और उनपर नियंत्रण के प्रति जागरूकता दिखती है।
- महिलाओं और शिशुओं के प्रति संवेदनशीलता– जागरुकता अभियान, घर–घर जाकर लोगों से बात करना। उन्हें गर्भावस्था से लेकर प्रसव के बाद तक मां और बच्चे की देखरेख की पूरी जानकारी देना जैसे प्रयासों से यह नतीजा निकला है कि अब लोग महिलाओं और बच्चों के प्रति संवेदनशील हो रहे हैं।
- जन्म–मृत्यु पंजीकरण– यह एक ऐसा मुद्दा है जो गांव में तो क्या शहरों में भी लोग जरुरी नहीं समझते हैं। समिति और संस्थाओं के प्रचार–प्रसार से अब ग्रामीणों ने जन्म और मृत्यु का पंजीकरण कराना शुरु कर दिया है। इसके लिये वह अब बिना कहे खुद जाकर पंजीकरण करवाते हैं।

★ स्वास्थ्य से जुड़े सप्ताह और दिवस का आयोजन– समितियों के गठन के बाद से ग्राम स्तर पर विश्व स्तरीय स्वास्थ्य दिवस और स्वास्थ्य संबंधित अन्य दिवस जैसे निमोनिया अभियान, विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन, विश्व पोषाहार सप्ताह, विश्व जनसंख्या दिवस का आयोजन होने लगा है।

★ समितियों की प्रभावी कार्यप्रणाली– प्रशिक्षण और समय–समय पर मार्गदर्शन के साथ–साथ गतिविधियों में उरमूल ट्रस्ट के प्रतिनिधियों के भाग लेने से यह लाभ मिला कि समितियों ने प्रभावी रुप से काम करना शुरु कर दिया है। उन्होंने आंगनबाड़ी में पोषाहार, स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था, गांव की साफ–सफाई और लोगों के स्वास्थ्य को लेकर पैरवी करना शुरु कर दिया है। जबकि उनकी निगरानी के साथ–साथ अपने समुदाय की समस्याओं पर आला अधिकारियों के ध्यान न देने पर मीडिया का सहारा लेना शुरु कर दिया है।

सुझाव

★ स्वास्थ्य योजनाओं की संपूर्ण जानकारी– केंद्र और राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर चलाई जाने वाली स्वास्थ्य योजनाओं और वर्तमान में जारी स्वास्थ्य योजनाओं में हो रहे बदलावों की संपूर्ण जानकारी वी.एच.एस.सी. के सदस्यों को दी जानी चाहिये। इन जानकारियों की समिति के सदस्यों में समझ बनाने के लिये और योजनाओं से जुड़े उनके सवालों के उत्तर देने की योजना पर विचार करना चाहिये। कम शिक्षा और संपूर्ण जानकारी के अभाव के कारण समितियों के सदस्यों को अपने कार्य को प्रभावी रुप से करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके लिये इलाके में स्वास्थ्य के मुद्दों पर कार्य कर रहे जनप्रतिनिधियों और स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग लिया जा सकता है।

★ आईईसी सामग्री के वितरण में बढ़ोतरी– स्वास्थ्य सेवाओं और रोगों के लक्षण और उनसे बचाव को आसान चित्रों द्वारा प्रदर्शित करने वाले पोस्टर उप स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी, पंचायत भवन, सामुदायिक भवन के साथ–साथ स्कूल और ऐसी जगहों पर लगे होने चाहिए, जहां समुदाय की मौजूदगी दिन में सबसे अधिक होती हो। पर्चे, छोटी किताबो का वितरण भी गांव में पढ़े–लिखे युवाओं के बीच किया जा सकता है। आशा सहयोगिनी को फ्लिप बुक का उपयोग कर लोगों को जागरुक करना जैसे वर्तमान में उरमूल ट्रस्ट और उसकी सहयोगी संस्था सेव द चिल्ड्रन, एन.आर.एच.एम. द्वारा तैयार सामग्री का वितरण करके कर रहें है। इन आईईसी सामग्री की संख्या बढ़ाई जानी चाहिये। जिससे की लोगों में जानकारी का प्रसार–प्रचार तेजी से हो रहा है।

★ अधिकारियों का सहयोग–

★ स्वास्थ्य सेवाओं पर निगरानी रखकर– स्वास्थ्य और उनसे संबंधित विभागों के अधिकारियों को समय–समय पर स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी करनी चाहिये। उन्हें अपने क्षेत्र में मौजूद उप स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी, स्कूल, राशन की दुकान आदि का निरीक्षण करना चाहिये। निरीक्षण के दौरान उन्हें समितियों के साथ–साथ आमजन की समस्याओं पर तुरंत प्रभावी कदम उठाने और उन्हें समस्याओं से निजात दिलाने की योजना बनाने में सहायता प्रदान करनी चाहिये।

★ जागरुकता अभियान में भाग लेकर– सभी अधिकारी समय–समय पर स्वास्थ्य विषय पर निकाली जाने वाली रैली, अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य कार्यक्रमों में भाग लेकर लोगों को जागरुक करने के साथ–साथ एक ही मंच पर आमजन के साथ बातचीत कर सकते है। इससे आमजन के आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी होगी और उन्हें समस्याओं से निपटने में भी मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

★ स्कूलों में बच्चों के साथ सत्र लेकर– महीने के किसी भी एक दिन स्वास्थ्य और उससे संबंधित अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और स्वास्थ्य मुद्दों पर कार्य कर रही स्वैच्छिक संस्थानों को थोड़ा समय निकालकर अपने कार्यक्षेत्र में मौजूद स्कूलों में बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जानकारी देने के लिये एक सत्र लेना चाहिये। इस सत्र में बच्चों की रुचि बनी रहे इसके लिये पेंटिंग, निबंध, वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाना चाहिये। इससे वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की नीव भी मजबूत होगी।

★ मातृ–शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस की तर्ज पर शिविरों का आयोजन– भौगोलिक दृष्टि से देखा जाये तो राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं की आमजन तक पहुंच न बन पाने का सबसे बड़ा कारण यहां की लंबी दूरियां हैं। इसलिये मातृ–शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस की तर्ज पर ही ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करना चाहिये। हालांकि चिकित्सा अधिकारियों की संख्या कम होने के कारण ऐसा कर पाना संभव नहीं है लेकिन तीन महीने में एक बार जिले के केंद्र से दूर ग्रामीण क्षेत्र की ऐसी जगहों पर इन शिविरों का आयोजन किया जा सकता है, जहां आमजन आसानी से पंहुच सकें। वी.एच.एस.सी. के अधिकतर सदस्यों का कहना है कि मूलतः स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन जिले के केंद्र में स्थित जिला अस्पताल में ही होता है। जबकि वहां इलाज के लिये लोग प्रतिदिन आते ही हैं।

इन गतिविधियों का आयोजन करने और उनके प्रभावी रुप से संचालन में गैर सरकारी संस्थाओं की सहायता एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकती हैं।

उरमूल ट्रस्ट

उरमूल ट्रस्ट एक स्वैच्छिक संस्थान है। वर्ष 1983 से थार मरुस्थल के कठोर और दुर्गम इलाकों में सामाजिक और आर्थिक तौर पर कमजोर वर्ग को मजबूत करने के लिए उरमूल ट्रस्ट उनकी मदद कर रहा है। विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, पर्यावरण एवं मातृ–शिशु देखभाल जैसे मुद्दों पर काम करते हुये संस्थान मरुस्थल में रहने वाले लोगों की क्षमता निर्माण और उनके कौशल विकास में सहायता कर उन्हें मूलभूत सेवाओं से जोड़ने का काम कर रही है। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम जैसे शिक्षाकर्मी, लोक जुम्बिश और समेकित बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस.) के प्रभावी क्रियान्वयन में उरमूल ट्रस्ट ने कार्यान्वयन एजेंसी के तौर पर काम किया है।

सेव द चिल्ड्रन

सेव द चिल्ड्रन एक स्वतंत्र संगठन है। जो बच्चों की दुनिया को सहेजने और उन्हें उनके अधिकार दिलाने के लिये पूरे विश्व में काम कर रहा है। समाज बच्चों के अधिकारों को समझे और बच्चों के प्रति संवेदनशील हो, प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएं आमजन तक आसानी से पहुंचे, मातृ–शिशु स्वास्थ्य देखभाल में सुधार हो, बच्चों में कुपोषण खत्म हो, लोग स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक रहे इसके लिए संस्था समुदायों के साथ मिलकर सरकारी स्वास्थ्य प्रणालियों और आई.सी.डी.एस. के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए काम कर रहा है। जैसलमेर जिले में अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले स्वास्थ्य दिवसों और स्वास्थ्य रैलियों का ग्राम स्तर पर आयोजन करके और ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति के क्षमता वर्धन के लिए सेव द चिल्ड्रन सहयोगी संस्था के रूप में उरमूल ट्रस्ट के साथ कार्यरत है।

Urmul Trust
Save the Children
India